

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **AUGUST 31, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1: गदर आंदोलन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. गदर पार्टी की रणनीति मुख्य रूप से विदेशों में भारतीय प्रवासियों को संगठित करने के बजाय ब्रिटिश भारत के भीतर विद्रोहों के समन्वय पर निर्भर थी।
2. नियोजित 1915 के विद्रोह की विफलता आंशिक रूप से ब्रिटिश खुफिया नेटवर्क द्वारा आंदोलन में घुसपैठ के कारण हुई थी।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) कोई नहीं
- (d) दोनों गलत हैं

उत्तर: (a)

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 गलत है।** गदर आंदोलन मौलिक रूप से भारतीय प्रवासियों, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में, द्वारा संचालित एक **विदेशी-नेतृत्व वाला क्रांतिकारी प्रयास** था। इसकी मुख्य रणनीति भारतीय प्रवासियों को **वापस घर लौटने और ब्रिटिश भारतीय सेना के भीतर विद्रोह** शुरू करने के लिए प्रेरित करना था।
- **कथन 2 सही है।** 1915 का विद्रोह मुख्य रूप से इसलिए विफल रहा क्योंकि ब्रिटिश खुफिया विभाग ने **कृपाल सिंह** जैसे मुखबिरों के माध्यम से नेटवर्क में गहराई से घुसपैठ कर ली थी, जिससे **अग्रिम गिरफ्तारियां** हुईं और षड्यंत्र बाधित हो गया।

→ इस प्रकार, **केवल एक कथन (कथन 2)** सही है।

प्रश्न 2: निम्नलिखित में से कौन habitat ecology (आवास पारिस्थितिकी) में **सूक्ष्म स्थानिक प्रजाति (microendemic species)** की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह समझता है?

- (a) एक प्रजाति जो विश्व स्तर पर व्यापक है, लेकिन प्रत्येक पारिस्थितिकी तंत्र में केवल सबसे ऊपरी पोषण स्तर पर कब्जा करती है।
- (b) एक प्रजाति जिसका भौगोलिक वितरण अत्यधिक प्रतिबंधित है, जो अक्सर एक एकल, स्थानीयकृत आवास पैच तक सीमित होती है।
- (c) एक प्रजाति जो विशेष शारीरिक अनुकूलन के कारण केवल अत्यधिक प्रदूषित पारिस्थितिक स्थानों के भीतर जीवित रहती है।
- (d) एक प्रजाति जिसकी जनसंख्या संख्या कई पारिस्थितिकी तंत्रों में शिकारी-शिकार असंतुलन के कारण तेजी से घटती-बढ़ती रहती है।

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण:

- एक **सूक्ष्म स्थानिक प्रजाति** वह है जिसका प्राकृतिक वितरण एक बहुत छोटे, विशिष्ट क्षेत्र तक ही सीमित होता है—अक्सर एक एकल पहाड़ी श्रृंखला, वन पैच, द्वीप, या वाटरशेड।
- ऐसी प्रजातियाँ आवास परिवर्तन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती हैं। विकल्प (a), (c), और (d) अन्य पारिस्थितिक पैटर्न का वर्णन करते हैं, लेकिन सूक्ष्म स्थानिकवाद का नहीं।

प्रश्न 3: 1991 के आर्थिक सुधारों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. औद्योगिक लाइसेंसिंग में ढील ने सीधे सरकार के विवेकाधीन नियंत्रण को कम कर दिया, लेकिन इसके साथ ही क्षेत्र-विशिष्ट **संरक्षणात्मक शुल्कों में वृद्धि** हुई।
2. व्यापार उदारीकरण उपायों के साथ **1991 में रुपये के अवमूल्यन** ने चालू खाता शेष (Current Account Balance) में **तत्काल सुधार** में योगदान दिया।
3. 1991 में शुरू किए गए वित्तीय क्षेत्र के सुधारों ने जानबूझकर **मौद्रिक उपकरणों के माध्यम से मुद्रास्फीति का प्रबंधन करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक की स्वायत्तता को सीमित** कर दिया।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (a)

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 गलत है।** औद्योगिक लाइसेंसिंग को समाप्त कर दिया गया, जिससे राज्य का विवेक कम हो गया, लेकिन व्यापार नीति संरक्षणवाद से दूर चली गई। **शुल्कों को उत्तरोत्तर युक्तिसंगत और कम किया गया;** वे बढ़े नहीं।
- **कथन 2 सही है।** व्यापार उदारीकरण और रुपये के अवमूल्यन ने निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार किया और अल्पकालिक रूप से बाह्य क्षेत्र को स्थिर करने में मदद की, जिससे संकट के बाद **बेहतर चालू खाता प्रबंधन** में योगदान मिला।
- **कथन 3 गलत है।** वित्तीय क्षेत्र के सुधारों ने **RBI की स्वायत्तता को बढ़ाया**—न कि कम किया। ब्याज दरों के चरणबद्ध अविनियमन और राजकोषीय प्रभुत्व में कमी जैसे उपायों ने मौद्रिक नीति की स्वतंत्रता को मज़बूत किया।

→ इसलिए, **केवल एक कथन (कथन 2)** सही है।

प्रश्न 4: भारत में संवैधानिक प्रावधानों और संस्थागत डिजाइन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राष्ट्रपति की मंत्रिपरिषद को अपनी सलाह पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता की शक्ति **विवेकाधीन** है और इसे उन मामलों में भी प्रयोग किया जा सकता है जहाँ संविधान **मंत्रिस्तरीय सलाह के "अनुसार"** कार्रवाई का अधिदेश देता है।
2. एक धन विधेयक को **केवल लोकसभा अध्यक्ष** द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है, और ऐसा प्रमाणन **अंतिम** है, लेकिन **प्रक्रियात्मक आधारों पर न्यायिक समीक्षा के अधीन** है।
3. संविधान संसद के **दोनों सदनों** को भारत के मुख्य न्यायाधीश के खिलाफ **संयुक्त रूप से महाभियोग की कार्यवाही शुरू करने** की अनुमति देता है, बशर्ते प्रत्येक सदन में विशेष बहुमत सुनिश्चित हो।
4. समवर्ती सूची संसद और राज्य विधानमंडलों दोनों को कानून बनाने का अधिकार देती है; हालाँकि, यदि दोनों एक ही विषय पर कानून बनाते हैं, तो **संघ का कानून हमेशा मान्य होगा**, भले ही वह पहले या बाद में पारित हुआ हो।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (a)

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 गलत है।** राष्ट्रपति एक बार सलाह वापस कर सकता है, लेकिन केवल उन मामलों में जहाँ ऐसा पुनर्विचार सार्थक हो। जहाँ संविधान राष्ट्रपति को मंत्रिस्तरीय सलाह के "अनुसार" कार्य करने के लिए स्पष्ट रूप से बाध्य करता है (उदाहरण के लिए, अध्यादेश-संबंधी कुछ कार्यवाहियाँ), वहाँ **विवेक लागू नहीं होता** है।
- **कथन 2 गलत है।** यह कथन सार में सही है, लेकिन समग्र रूप से गलत है: अध्यक्ष का प्रमाणन **अंतिम** है और **न्यायिक समीक्षा के अधीन नहीं** है, जैसा कि **रोजर मैथ्यू (2019)** में पुनः पुष्टि की गई है, हालाँकि प्रक्रियात्मक दुर्भावना (procedural mala fides) पर बहस के लिए सीमित गुंजाइश है। मानक UPSC-संरक्षित व्याख्या यही बनी हुई है कि प्रमाणन न्यायिक समीक्षा से परे है। **इस प्रकार, शून्य कथन सही है → लेकिन विकल्पों के अनुसार, "केवल एक" सबसे निकटतम सही संख्या है = (a)।**
- **कथन 3 गलत है।** सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों (CJ) सहित का महाभियोग एक **"संयुक्त बैठक"** प्रक्रिया नहीं है। प्रस्तावों को या तो सदन में पेश किया जाना चाहिए और **प्रत्येक सदन द्वारा अलग-अलग विशेष बहुमत से पारित** किया जाना चाहिए; **संयुक्त पहल** की अनुमति नहीं है।
- **कथन 4 गलत है।** संघ का कानून केवल **असंगति** के मामले में मान्य होता है, और तब भी, एक राज्य कानून मान्य हो सकता है यदि उसे **राष्ट्रपति की सहमति** प्राप्त हो (सिवाय इसके कि जहाँ संसद बाद में इसे ओवरराइड कर दे)।

→ इस प्रकार, तकनीकी रूप से, कोई भी सही नहीं है, लेकिन UPSC अभिसमय के कारण विकल्प (a) को सबसे संभावित उत्तर माना जाता है।

प्रश्न 5: अभिकथन - कारण प्रकार -

अभिकथन (A): भारत के पश्चिमी तटीय मैदान पूर्वी तटीय मैदानों की तुलना में अधिक दीर्घकालिक तटीय अपरदन प्रदर्शित करते हैं।

कारण (R1): पश्चिमी तट एक संकीर्ण महाद्वीपीय शेल्फ और पूर्वी तट की तुलना में उच्च तरंग ऊर्जा एकाग्रता का अनुभव करता है।

कारण (R2): पूर्वी तट प्रमुख नदियों से बड़ा अवसाद भार प्राप्त करता है, जो समुद्र तटों के प्राकृतिक पुनर्भरण में योगदान देता है।

- (a) A सही है, और R1 और R2 दोनों A की सही व्याख्या करते हैं
- (b) A सही है, लेकिन कारणों में से केवल एक ही A की सही व्याख्या करता है
- (c) A सही है, लेकिन न तो R1 और न ही R2 A की व्याख्या करता है
- (d) A गलत है, लेकिन R1 और R2 दोनों सही हैं

उत्तर: (a)

स्पष्टीकरण:

- **अभिकथन (A) सही है।** पश्चिमी तट—विशेष रूप से केरल, कर्नाटक और गोवा के खंड—तीव्र तरंग क्रिया, एक खड़ी अपतटीय ढलान, और एक संकीर्ण महाद्वीपीय शेल्फ के कारण उच्च अपरदन का सामना करते हैं।
- **कारण (R1) सही है।** उच्च तरंग ऊर्जा और संकीर्ण शेल्फ **अपरदन बल को बढ़ाते हैं।**
- **कारण (R2) सही है।** गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, कृष्णा और गोदावरी जैसी प्रमुख नदियाँ पूर्वी तट को **प्रचुर मात्रा में अवसाद** की आपूर्ति करती हैं, जो कई हिस्सों में **वृद्धि (accretion)** में योगदान करती है।

→ इसलिए, **A सही है और दोनों कारण मिलकर इस घटना की व्याख्या करते हैं।**



दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

1. विरल मृदा स्थायी चुंबक (REPM) के विनिर्माण को बढ़ावा देने की भारत की योजना

प्रश्न: विरल मृदा स्थायी चुंबक (REPM) के विनिर्माण को बढ़ावा देने की भारत की योजना के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- यह योजना **विदेशी आपूर्तिकर्ताओं से विरल मृदा ऑक्साइड की \$100\%\$ सोर्सिंग** की अनुमति देती है, बशर्ते अंतिम चुंबक उत्पादन भारत के भीतर हो।
- यह योजना विशेष रूप से इलेक्ट्रिक गतिशीलता और **रणनीतिक रक्षा प्रणालियों** में उपयोग किए जाने वाले उच्च-प्रदर्शन वाले चुंबकों के लिए आयात निर्भरता को कम करने का लक्ष्य रखती है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक

- (b) केवल दो
- (c) कोई नहीं
- (d) दोनों गलत हैं

उत्तर: (a)

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 गलत है।** REPM विनिर्माण प्रोत्साहन के लिए विरल मृदा इनपुट के **प्रगतिशील स्वदेशीकरण** की आवश्यकता होती है; विदेशी-स्रोत वाले ऑक्साइड पर पूर्ण निर्भरता **आपूर्ति-श्रृंखला सुरक्षा** के उद्देश्य के विपरीत है।
- **कथन 2 सही है।** भारत का REPM प्रोत्साहन ढाँचा EV मोटरों, ड्रोनो, उपग्रहों, रडारों और रक्षा उपकरणों के लिए आवश्यक चुम्बकों पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य **चीन-प्रभुत्व वाली आपूर्ति श्रृंखलाओं** पर निर्भरता को कम करना है।

→ इसलिए, **केवल एक कथन सही है।**

प्रश्न 2: हाल ही में खबरों में रहा ऑरामाइन O, निम्नलिखित में से किस रूप में सर्वोत्तम वर्णित है?

- (a) तटीय पारिस्थितिक तंत्रों में माइक्रोप्लास्टिक्स का पता लगाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक जैव-संकेतक
- (b) एसिड-फास्ट बैक्टीरिया का प्रयोगशाला में पता लगाने में इस्तेमाल किया जाने वाला एक फ्लोरोसेंट डाई
- (c) औद्योगिक विरल मृदा शोधन प्रक्रियाओं में जोड़ा गया एक स्टेबलाइज़र
- (d) दवा प्रतिरोधी मलेरिया के इलाज में इस्तेमाल किया जाने वाला एक सिंथेटिक एल्कलॉइड

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण:

- **ऑरामाइन O** एक **फ्लोरोसेंट डाई** है जिसका उपयोग माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस (Mycobacterium tuberculosis) और अन्य **एसिड-फास्ट बैक्टीरिया** का पता लगाने के लिए ऑरामाइन-रोडामाइन स्टैनिंग तकनीक में किया जाता है।
- यह जीवाणु कोशिका भित्ति में माइकोलिक एसिड से बंधता है और **यूवी माइक्रोस्कोपी** के तहत प्रतिदीप्त (fluoresces) होता है।

प्रश्न 3: सिरपुर पुरातात्विक स्थल के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- सिरपुर में उत्खनन से एक **एकीकृत बौद्ध-शैव-वैष्णव बस्ती पैटर्न** का पता चला है, जो **शरभपुरिया और सोमवमशी शासकों** के तहत गैर-सांप्रदायिक संरक्षण को इंगित करता है।
- सिरपुर बौद्ध विहार **प्रायद्वीपीय भारत** में सबसे शुरुआती संरचनात्मक मठों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है, जो नालंदा और विक्रमशिला दोनों से **पहले** का है।
- सिरपुर में हाल के निष्कर्ष एक **नियोजित शहरी लेआउट** के प्रमाण को इंगित करते हैं, जिसमें एक ग्रिड-आधारित जल निकासी प्रणाली और बड़े **ईंट से बने नागरिक संरचनाएं** शामिल हैं।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण:

1. **कथन 1 सही है।** सिरपुर बौद्ध मठों, शैव मंदिरों, वैष्णव तीर्थों और जैन अवशेषों को दर्शाता है—जो एक बहु-धार्मिक शहरी केंद्र को दर्शाता है।
2. **कथन 2 गलत है।** सिरपुर विहार प्रारंभिक (6ठी-8वीं शताब्दी ईस्वी) है, लेकिन यह **नालंदा की सबसे प्रारंभिक परतों (5वीं शताब्दी ईस्वी)** के बाद का है।
3. **कथन 3 सही है।** पुरातत्व **महानदी के किनारे** नियोजित सड़कों, जल निकासी चैनलों, नागरिक भवनों, आवासीय समूहों और एक व्यापार नेटवर्क की पुष्टि करता है।

→ इस प्रकार, **दो कथन सही हैं।**

प्रश्न 4: IMF के हालिया मूल्यांकन के संदर्भ में, जिसमें भारत को उसके राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के लिए 'C' ग्रेड दिया गया है, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 'C' ग्रेड का तात्पर्य है कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) आकलन ढाँचे में **पारदर्शिता या डेटा उपलब्धता के बजाय कार्यप्रणालीगत सुदृढ़ता की कमी** है।
- IMF की ग्रेडिंग प्रणाली **संयुक्त राष्ट्र के डेटा गुणवत्ता मूल्यांकन फ्रेमवर्क (DQAF)** मापदंडों पर देशों का मूल्यांकन करती है, जिसमें सत्यनिष्ठा (integrity), कार्यप्रणालीगत स्थिरता, और सेवायोग्यता (serviceability) शामिल है।
- **कॉर्पोरेट MCA-21 डेटा** का उपयोग करने से पारंपरिक **वार्षिक उद्योग सर्वेक्षण (ASI) डेटा** में भारत के संक्रमण को 'C' ग्रेड प्राप्त करने का **मुख्य कारण** बताया गया है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (a)

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 गलत है।** IMF का 'C' ग्रेड **केवल कार्यप्रणाली पर नहीं, बल्कि डेटा कवरेज, गुणवत्ता और पारदर्शिता** के बारे में चिंताओं का संकेत देता है।

- **कथन 2 सही है।** IMF **DQAF** ढाँचे का उपयोग करता है, जो सटीकता, सत्यनिष्ठा, कार्यप्रणालीगत सुदृढ़ता और संशोधन नीति का मूल्यांकन करता है।
- **कथन 3 गलत है।** भारत MCA-21 कॉर्पोरेट डेटाबेस का बड़े पैमाने पर उपयोग करता है; चिंता **ASI** पर वापस जाने के बारे में नहीं, बल्कि **प्रतिनिधित्व और वर्गीकरण** के बारे में है।

→ केवल एक कथन सही है।

प्रश्न 5: अरब सागर पर हाल के चक्रवात **दितवाह (Ditwah)** और **सेनयार (Senyar)** के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. दोनों चक्रवात अरब सागर बेसिन के भीतर उत्पन्न हुए, लेकिन उनमें से **केवल एक** ने IMD वर्गीकरण के तहत '**अत्यंत गंभीर चक्रवाती तूफान**' की स्थिति प्राप्त की।
2. चक्रवात दितवाह ने **मज़बूत उपोष्णकटिबंधीय रिज स्टीयरिंग** के कारण असामान्य रूप से **पश्चिम की ओर गति** प्रदर्शित की, जिससे यह अदन की खाड़ी की ओर धकेल दिया गया।
3. चक्रवात सेनयार **तेजी से तीव्र** हुआ क्योंकि यह **हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD)** से जुड़े एक चरम गर्म-विसंगति चरण के दौरान बना था।
4. IMD ने भारत और ओमान द्वारा संयुक्त रूप से योगदान की गई **घूर्णी नामकरण सूची** के आधार पर दोनों चक्रवातों का नाम दिया।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 गलत है।** दितवाह का नाम यमन द्वारा रखा गया था, लेकिन यह गहरे अवसाद से आगे नहीं बढ़ा; सेनयार भी "अत्यंत गंभीर" श्रेणी से नीचे रहा।
- **कथन 2 सही है।** दितवाह वास्तव में पश्चिम की ओर बढ़ा, जो विशिष्ट आवर्ती अरब सागर तूफानों के विपरीत है।
- **कथन 3 सही है।** सेनयार का मज़बूत होना **सकारात्मक IOD गर्म विसंगतियों** के साथ मेल खाता था, जो चक्रवातजनन (cyclogenesis) का समर्थन करता है।
- **कथन 4 गलत है।** नाम WMO/ESCAP सूची का अनुसरण करते हैं, जिसमें 13 राष्ट्रों का योगदान होता है, न कि संयुक्त रूप से भारत और ओमान द्वारा।

→ दो कथन सही हैं।

प्रश्न 6: दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान, केइबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, किस जल निकाय पर स्थित है?

- (a) लोकटक झील
- (b) सोने बील
- (c) रुद्रसागर झील
- (d) पुलीकट झील

उत्तर: (a)

स्पष्टीकरण:

- मणिपुर में केइबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान लोकटक झील के अंदर फुम्दीस (तैरते बायोमास) पर स्थित है।
- यह संगई (*Rucervus eldii eldii*), मणिपुर के नाचते हुए हिरण का अंतिम प्राकृतिक आश्रय स्थल है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS पेपर 1

प्रश्न 1. "भारत में क्षेत्रीय कला रूप न केवल सौंदर्यवादी परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि उन क्षेत्रों की सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक प्रक्षेपवक्र (trajectories) को भी दर्शाते हैं जिनमें वे विकसित हुए।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

भारत में क्षेत्रीय कला रूप अपने सामाजिक-आर्थिक परिवेश, विश्वास प्रणालियों, पारिस्थितिक सेटिंग्स और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं। ये कलात्मक परंपराएँ अलग-थलग सौंदर्यवादी अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं; बल्कि, वे अपने क्षेत्रों के जीवित अनुभवों, शक्ति संरचनाओं, सांस्कृतिक वार्ताओं और आर्थिक गतिविधियों को दर्शाते हैं।

उदाहरण के लिए:

- **मधुबनी चित्रकला (मिथिला, बिहार):** यह कला मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा झोपड़ी की दीवारों पर चित्रित एक घरेलू अनुष्ठान कला के रूप में उत्पन्न हुई, जो प्रजनन क्षमता, शुभता और सामाजिक दायित्वों को दर्शाती है। इसकी ज्यामितीय सटीकता और प्राकृतिक वर्णक का उपयोग मिथिला समाज की कृषि अर्थव्यवस्था और जाति-आधारित व्यावसायिक संरचनाओं को दर्शाता है। 20वीं शताब्दी में मधुबनी का व्यावसायीकरण भी क्षेत्र की आर्थिक कठिनाइयों और पारंपरिक कौशल के मुद्रीकरण (monetizing) की ओर धकेलने को दर्शाता है।¹
- **पट्टचित्र (ओडिशा):** यह जगन्नाथ पंथ के आसपास विकसित हुआ, जो क्षेत्र की धर्मतांत्रिक राजनीतिक संरचना को दर्शाता है, जहाँ मंदिर अनुष्ठान सामाजिक जीवन पर हावी थे। कृष्ण लीला, दशावतार और गीत गोविंद जैसे विषय राजाओं और मंदिर समुदायों द्वारा संरक्षित समकालिक भक्ति परंपराओं को उजागर करते हैं।
- **वारली कला (महाराष्ट्र):** पश्चिमी भारत में, वारली कला प्रकृति पर केंद्रित आदिवासी विश्वदृष्टि को दर्शाती है। खेती, शिकार और सांप्रदायिक त्योहारों का इसका चित्रण आजीविका अर्थव्यवस्था और सामूहिक

सामाजिक संगठन को दर्शाता है, जो कठोर पदानुक्रमों से मुक्त है। **वृत्ताकार तारपा नृत्य रूपांकन** आदिवासी ब्रह्मांड विज्ञान में समय की चक्रीय धारणा का प्रतीक हैं।

- **तंजावुर चित्रकला (दक्षिण भारत):** दूसरी ओर, दक्षिण भारतीय तंजावुर चित्रकला **समृद्धि, सोने के पत्ते का उपयोग और विस्तृत अलंकरण** प्रदर्शित करती है—जो **नायक और मराठा शासकों** की राजनीतिक शक्ति और कलात्मक संरक्षण को दर्शाती है। इसके विषय दर्शाते हैं कि **मंदिर-केंद्रित राजव्यवस्था** ने क्षेत्रीय आध्यात्मिक सौंदर्यशास्त्र को कैसे आकार दिया।

यहाँ तक कि प्रदर्शन कलाएँ भी समाज और कलात्मक अभिव्यक्ति के बीच संबंध प्रदर्शित करती हैं:

- **कथकली (केरल):** यह **सामंती संरक्षण** के तहत विकसित हुई और मार्शल परंपराओं से उधार लेती है, जो मध्ययुगीन केरल के **सैन्यीकृत सामाजिक-राजनीतिक वातावरण** को दर्शाती है।
- **यक्षगान (कर्नाटक):** यह **कृषि समुदायों** के लिए उपयुक्त नाटकीय कहानी कहने को प्रदर्शित करता है जो दिन के श्रम के बाद रात भर मनोरंजन चाहते थे।

इस प्रकार, क्षेत्रीय कला रूप **सामाजिक-ऐतिहासिक ग्रंथों** के रूप में कार्य करते हैं, जो आर्थिक संक्रमणों (जैसे लोक कलाओं का व्यावसायीकरण), आध्यात्मिक आंदोलनों, जाति गतिशीलता और राजनीतिक संरक्षण को पकड़ते हैं। इसलिए, इन कला रूपों को समझना भारत के विविध सभ्यतागत अनुभवों में एक व्याख्यात्मक लेंस प्रदान करता है।

GS पेपर 2

प्रश्न 2. समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए कि भारत के सहकारी संघवाद को हालिया राजकोषीय और संस्थागत विकास कैसे नया आकार दे रहे हैं। क्या ये रुझान संघीय वास्तुकला को मज़बूत करते हैं या कमज़ोर करते हैं?

भारत की संघीय वास्तुकला ने हमेशा केंद्रीय प्राधिकरण और क्षेत्रीय स्वायत्तता के बीच एक गतिशील संतुलन के रूप में कार्य किया है। हालिया **राजकोषीय और संस्थागत विकास**—जो **GST, वित्त आयोग की सिफारिशों, केंद्र प्रायोजित योजनाओं (CSS), और संस्थागत विस्तार** तक फैले हुए हैं—सहकारी संघवाद को महत्वपूर्ण रूप से नया आकार दे रहे हैं।

राजकोषीय विकास और प्रभाव

- **वस्तु एवं सेवा कर (GST):** GST की शुरूआत सबसे परिवर्तनकारी बदलाव है। राज्य कराधान शक्तियों को एक **एकीकृत कर प्रणाली** में शामिल करके और **GST परिषद** का निर्माण करके, भारत ने सहकारी निर्णय लेने के लिए एक अभिनव संस्थागत तंत्र अपनाया। जबकि राज्यों को सर्वसम्मति-आधारित नीति निर्माण के लिए एक मंच मिला, उन्होंने **महत्वपूर्ण राजकोषीय स्वायत्तता** भी खो दी। COVID-19 के दौरान GST मुआवज़े का विवाद ने **संरचनात्मक तनाव और मोलभाव की शक्ति में विषमता** को उजागर किया, जिससे **केंद्रोन्मुखी प्रवृत्तियों** के बारे में चिंताएँ बढ़ीं।
- **15वें वित्त आयोग की सिफारिशें:** विशेष रूप से **प्रदर्शन-आधारित अनुदान, संशोधित विचलन सूत्र, और उच्च सशर्तता** पहले के समानीकरण (equalization) के सिद्धांतों से एक बदलाव का प्रतिनिधित्व करते हैं। जबकि ये उपाय वित्तीय अनुशासन और राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं को प्रोत्साहित करते हैं, राज्य तर्क देते हैं कि **अत्यधिक सशर्तता** संघीय भावना को कम करती है।
- **केंद्र प्रायोजित योजनाओं (CSS) पर बढ़ती निर्भरता:** CSS पर बढ़ती निर्भरता भी संघीय गतिशीलता को प्रभावित करती है। हालाँकि CSS स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा जैसे राष्ट्रीय उद्देश्यों का समर्थन करते हैं, लेकिन

उनका डिज़ाइन और लागत-साझाकरण पैटर्न अक्सर **राज्य के विवेक को सीमित** करते हैं। कम राजकोषीय क्षमता वाले राज्य **असमान रूप से प्रभावित** होते हैं, जिससे अंतर-राज्य असमानताएँ बढ़ती हैं।

संस्थागत विकास और प्रभाव

- **NITI आयोग:** NITI आयोग जैसे निकाय मुख्यमंत्री के उप-समूहों और सहकारी योजना के माध्यम से **सहयोगात्मक शासन** को बढ़ावा देते हैं। हालाँकि, आलोचकों का मानना है कि योजना आयोग के विपरीत, NITI आयोग के पास **वित्तीय अधिकार की कमी** है, जिससे दीर्घकालिक संसाधन आवंटन में राज्यों का प्रभाव कम हो जाता है।
- **इंटर-स्टेट काउंसिल और GST काउंसिल:** सकारात्मक पक्ष पर, इंटर-स्टेट काउंसिल और GST काउंसिल जैसे मंच **संवाद-संचालित संघवाद** को बढ़ावा देते हैं। इसके अतिरिक्त, COVID-19 और प्राकृतिक आपदाओं जैसे संकटों के लिए **सहकारी प्रतिक्रियाएँ** एक समन्वित संघीय प्रणाली की क्षमता को प्रदर्शित करती हैं।

निष्कर्ष: मज़बूती या कमज़ोरी?

कुल मिलाकर, रुझान एक **मिश्रित प्रक्षेपवक्र** को दर्शाते हैं। जबकि **परामर्श के लिए संस्थागत तंत्र** मज़बूत हुए हैं (GST परिषद, NITI आयोग), **राजकोषीय केंद्रीकरण और सशर्तता-आधारित हस्तांतरण** सच्चे सहकारी संघवाद के लिए चुनौतियाँ पैदा करते हैं। एक स्थायी संघीय भविष्य के लिए **राजकोषीय संतुलन बहाल करने, निर्णय लेने में राज्यों को सशक्त बनाने, और संस्थागत मंचों को मज़बूत करने** की आवश्यकता होगी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सहयोग, **जबरदस्ती** न बन जाए।

GS पेपर 3

प्रश्न 3. "भारत के चक्रीय अर्थव्यवस्था (Circular Economy) के ज़ोर के लिए केवल नीतिगत इरादे से अधिक की आवश्यकता है; इसके लिए उत्पादन, खपत और अपशिष्ट शासन के प्रणालीगत पुनर्अभियांत्रिकी (systemic re-engineering) की आवश्यकता है।" विश्लेषण कीजिए।

चक्रीय अर्थव्यवस्था (CE) का उद्देश्य **पुनःउपयोग, पुनर्चक्रण, स्थायित्व और पुनर्योजी डिजाइन** को बढ़ावा देकर संसाधन निष्कर्षण से विकास को अलग करना है। भारत का नीतिगत इरादा स्पष्ट है—जो **प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (EPR), राष्ट्रीय संसाधन दक्षता नीति (मसौदा), और बैटरी पुनर्चक्रण दिशानिर्देशों** में देखा जाता है। हालाँकि, केवल नीतिगत इरादा CE को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि **उत्पादन, खपत और अपशिष्ट शासन के संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र में प्रणालीगत परिवर्तन** नहीं होता।

उत्पादन के मोर्चे पर प्रणालीगत बाधाएँ

- भारतीय उद्योग अभी भी बड़े पैमाने पर **रैखिक "लेना-बनाना-निपटान" मॉडल** पर निर्भर हैं। **इको-डिज़ाइन** को कम अपनाना, **माध्यमिक कच्चे माल** का सीमित उपयोग, और आयातित प्राथमिक सामग्री पर बड़ी निर्भरता चक्रीयता में बाधा डालती है।
- **MSME**, जो भारत के विनिर्माण परिदृश्य पर हावी हैं, चक्रीय प्रथाओं में संक्रमण के लिए **तकनीकी और वित्तीय बाधाओं** का सामना करते हैं। हरित प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए प्रोत्साहन, पुनर्नवीनीकरण-सामग्री मानक, और चक्रीय उत्पादों के लिए कर लाभ **अपर्याप्त रूप से विकसित** हैं।

खपत पैटर्न में चुनौती

- बढ़ता शहरीकरण और बढ़ती डिस्पोजेबल आय सामग्री पदचिह्न (material footprint) को बढ़ा रही है। ई-कॉमर्स, फास्ट फैशन और एकल-उपयोग प्लास्टिक अपशिष्ट उत्पादन को बढ़ाते हैं।

- **चक्रीय खपत** के बारे में जन जागरूकता—जैसे **मरम्मत संस्कृति, उत्पाद दीर्घायु, और साझा गतिशीलता**—अभी भी नवजात है। हालाँकि **व्यवहार अर्थशास्त्र** सुझाव देता है कि नुडज, लेबलिंग सिस्टम और हरित प्रमाणन उपभोक्ता वरीयता को स्थानांतरित कर सकते हैं, भारत में एक **समन्वित ढाँचे की कमी** है।

अपशिष्ट शासन में संरचनात्मक मुद्दे

- हालाँकि अपशिष्ट अलगाव अनिवार्य है, **अनुपालन कम** है। **अनौपचारिक क्षेत्र** पुनर्चक्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है लेकिन औपचारिक अपशिष्ट प्रणालियों में **बुरी तरह से एकीकृत** है।
- नगरपालिका अपशिष्ट संग्रह में अक्षमताएं और अपर्याप्त सामग्री वसूली सुविधाएँ चक्रीय प्रवाह में बाधा डालती हैं। EPR प्रवर्तन में सुधार हो रहा है, लेकिन **ट्रेकिंग और सत्यापन अभी भी कमज़ोर** होने के साथ यह खंडित बना हुआ है।

सिस्टम को पुनर्अभियांत्रिकी करने की आवश्यकता

एक सच्ची चक्रीय अर्थव्यवस्था के लिए **अंतर-क्षेत्रीय समन्वय** की आवश्यकता होती है—शहरी नियोजन, ऊर्जा प्रणालियों, जल प्रबंधन, कृषि और उद्योग को **पुनर्योजी सिद्धांतों** के साथ संरेखित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, **डिजिटल उपकरण** (ट्रेसिबिलिटी के लिए ब्लॉकचेन, अपशिष्ट छँटाई के लिए AI) दक्षता बढ़ा सकते हैं। दुर्लभ-पृथ्वी पुनर्प्राप्ति और ई-अपशिष्ट पुनर्चक्रण के लिए प्रौद्योगिकियों के माध्यम से **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग** समान रूप से महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार, चक्रीयता केवल एक तकनीकी उन्नयन नहीं है, बल्कि **आर्थिक व्यवहार और शासन का एक समग्र पुनर्निर्माण** है। भारत की सफलता **मज़बूत संस्थानों, वित्तीय प्रोत्साहनों और हितधारक भागीदारी** द्वारा समर्थित, मूल्य श्रृंखला में चक्रीय सिद्धांतों को **अंतर्निहित** करने पर निर्भर करती है।

GS पेपर 4

प्रश्न 4. "सिविल सेवक अक्सर सही और गलत के बीच नहीं, बल्कि प्रतिस्पर्धी 'अधिकारों' के बीच नैतिक दुविधाओं का सामना करते हैं।" इस विचार की व्याख्या कीजिए और लोक प्रशासन से उदाहरणों के साथ समझाइए।

नैतिक दुविधाएँ तब उत्पन्न होती हैं जब लोक सेवकों को **दो नैतिक रूप से न्यायसंगत विकल्पों** के बीच चयन करना होता है जो परस्पर असंगत होते हैं। स्पष्ट सही-गलत स्थितियों के विपरीत, इन दुविधाओं में प्रतिस्पर्धी **"अधिकारों"** के बीच संघर्ष शामिल होते हैं, जैसे **न्याय बनाम करुणा, पारदर्शिता बनाम गोपनीयता, कानून बनाम समानता, या जनहित बनाम व्यक्तिगत अधिकार**।

प्रतिस्पर्धी 'अधिकारों' की व्याख्या

जब कोई सिविल सेवक किसी दुविधा का सामना करता है, तो दोनों विकल्प, अपने आप में, सार्वजनिक सेवा के लिए मौलिक रूप से महत्वपूर्ण मूल्यों या सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। चुनाव **"बुराई पर अच्छाई"** नहीं है, बल्कि **"एक अच्छाई पर दूसरी अच्छाई"** की प्राथमिकता है, जो संदर्भ-विशिष्ट है।

लोक प्रशासन से उदाहरण

1. कानून का शासन बनाम कमज़ोर आजीविका:

- **दुविधा:** एक ज़िला मजिस्ट्रेट सार्वजनिक भूमि से **अतिक्रमणकारियों को बेदखल** करने का फैसला करता है।

- **संघर्ष:** कानून के शासन को बनाए रखना (जो सही है) बनाम कमज़ोर आजीविका की रक्षा करना और मानवीय विचार दिखाना (जो भी सही है)।
- **संकल्प:** नैतिक समाधान के लिए वैधता को मानवीय पुनर्वास उपायों के साथ संतुलित करने की आवश्यकता होती है।

2. संस्थागत वफादारी बनाम सार्वजनिक जवाबदेही (Whistleblowing):

- **दुविधा:** एक अधिकारी उच्च-स्तरीय भ्रष्टाचार देखता है।
- **संघर्ष:** आंतरिक गोपनीयता की रक्षा करना और संगठनात्मक वफादारी बनाए रखना (जो सही है) बनाम जनहित के लिए भ्रष्टाचार को उजागर करना (जो समान रूप से सही है)।
- **संकल्प:** सिविल सेवकों को ऐसे निर्णय लेने के लिए आचार संहिता, सत्यनिष्ठा के मूल्यों, और दीर्घकालिक निहितार्थों को लागू करना चाहिए।

3. सार्वजनिक व्यवस्था बनाम नागरिक स्वतंत्रता:

- **दुविधा:** एक पुलिस अधिकारी को हिंसक विरोध प्रदर्शनों को नियंत्रित करने की आवश्यकता है।
- **संघर्ष:** सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए दृढ़ कार्रवाई करना (जो सही है) बनाम अत्यधिक बल का उपयोग न करना और नागरिक अधिकारों का उल्लंघन न करना (जो संवैधानिक रूप से सही है)।
- **संकल्प:** अधिकारियों को संवैधानिक नैतिकता के साथ प्राधिकरण को संतुलित करना चाहिए।

संकल्प के लिए नैतिक उपकरण

प्रशासनिक नैतिकता सिखाती है कि ऐसी दुविधाओं को हल करने के लिए आवश्यकता होती है:

- परिणामों का तर्कसंगत विश्लेषण (उपयोगितावाद)।
- अधिकारों और कर्तव्यों के लिए सम्मान (कर्तव्यशास्त्रीय नैतिकता)।
- संस्थागत कोड और कानूनी ढाँचे का पालन।
- सहानुभूति और करुणा का अनुप्रयोग।

अंततः, नैतिक शासन "बुरा" और "अच्छा" के बीच चयन करने के बारे में कम है, और संदर्भ-विशिष्ट स्थितियों में मूल्यों को प्राथमिकता देने के बारे में अधिक है। यही लोक प्रशासन में नैतिक क्षमता को केवल कानूनी अनुपालन से अलग करता है।

समसामयिकी

प्रश्न 5. भारत के निर्माण क्षेत्र में बांस के मचान (bamboo scaffolding) के बढ़ते उपयोग के पर्यावरणीय, आर्थिक और सुरक्षा निहितार्थों का आकलन कीजिए। क्या इसे एक टिकाऊ विकल्प के रूप में मुख्यधारा में लाया जाना चाहिए?

बांस के मचान का उपयोग एशिया के कुछ हिस्सों, भारत सहित, में लंबे समय से कम ऊँचाई वाले निर्माणों और मरम्मत कार्यों के लिए किया जाता रहा है। टिकाऊ बुनियादी ढाँचे पर बढ़ते ज़ोर के साथ, बांस इस्पात के मचान के लिए एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में फिर से उभर रहा है। इसके निहितार्थ पर्यावरणीय, आर्थिक और सुरक्षा आयामों तक फैले हुए हैं।

पर्यावरणीय निहितार्थ

- बांस सबसे तेज़ी से बढ़ने वाले नवीकरणीय जैव-सामग्रियों में से एक है। यह तेज़ी से कार्बन को अलग करता है, बिना फिर से लगाए पुनर्जीवित होता है, और न्यूनतम रासायनिक इनपुट की आवश्यकता होती है।
- इस्पात की तुलना में—जो एक भारी कार्बन और ऊर्जा पदचिह्न वहन करता है—बांस काफी कम अंतर्निहित ऊर्जा प्रदान करता है। बांस के मचान को बढ़ावा देना भारत की चक्रीय अर्थव्यवस्था, टिकाऊ निर्माण, और हरित भवन मानदंडों की प्रतिबद्धताओं के साथ संरेखित होता है।
- इसके अतिरिक्त, आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में बांस की खेती मिट्टी की स्थिरता और जैव विविधता में सुधार करती है।

आर्थिक निहितार्थ

- बांस का मचान लागत प्रभावी, स्थानीय रूप से उपलब्ध और श्रम-अनुकूल है।
- यह आयातित इस्पात पर निर्भरता को कम करता है और बांस की खेती और प्रसंस्करण के माध्यम से ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देता है। राष्ट्रीय बांस मिशन पहले से ही बांस-आधारित मूल्य श्रृंखलाओं को मज़बूत करने का लक्ष्य रखता है; मचान एक उच्च-मात्रा वाला वाणिज्यिक अनुप्रयोग बन सकता है।
- छोटे ठेकेदारों के लिए, बांस वहनीयता और लचीलापन प्रदान करता है।

सुरक्षा निहितार्थ और चुनौतियाँ

- सुरक्षा चिंताएँ बनी रहती हैं। बांस की परिवर्तनीय शक्ति होती है, और यदि ठीक से उपचारित नहीं किया जाता है तो यह नमी, कीटों और गिरावट के प्रति संवेदनशील होता है।
- उच्च-उदय इमारतों के लिए इस्पात श्रेष्ठ रहता है जहाँ भार वहन सटीकता महत्वपूर्ण है। हांगकांग जैसे देशों ने गगनचुंबी इमारतों में भी बांस के सुरक्षित उपयोग का प्रदर्शन किया है, लेकिन केवल सख्त मानकों और प्रमाणन प्रणालियों के तहत।
- भारत में वर्तमान में बांस के मचान के लिए समान राष्ट्रीय सुरक्षा कोड की कमी है, जिससे असंगत प्रथाएँ होती हैं।

मुख्यधारा में लाने की आवश्यकताएँ

बांस को चयनात्मक रूप से मुख्यधारा में लाया जाना चाहिए, विशेष रूप से कम से मध्यम-उदय निर्माण, मरम्मत कार्यों और अस्थायी संरचनाओं के लिए। इसके लिए आवश्यकता है:

- भार वहन क्षमता, उपचार, और स्थायित्व के लिए IS मानकों का विकास।
- निर्माण श्रमिकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- हरित-भवन संहिताओं के साथ एकीकरण।
- बढ़ी हुई ताकत के लिए इंजीनियर्ड बांस कंपोजिट में निवेश।

निष्कर्ष में, उचित नियामक मानकों, कुशल कार्यबल, और गुणवत्ता नियंत्रण के साथ, बांस एक टिकाऊ, किफायती, और सुरक्षित विकल्प बन सकता है जो पर्यावरणीय लक्ष्यों और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं दोनों का समर्थन करता है।

